10. समाज में जाति पाति

पाठ पढ़ने से पहले कक्षा में इन प्रश्नों पर विचार करो-
तुम्हारे गांव या शहर में कौन सी जातियां हैं? क्या हर जाति का कोई काम निश्चित है? क्या लोग अपनी जाति का पुराना काम ही करते हैं? जात-पात की बात का किस-किस चीज़ में ध्यान रखा जाता है? कभी तुम्हारे मन में जात-पात के बारे में कई सवाल उठे होंगे। कक्षा के सभी विद्यार्थी अपने अपने सवालों को बताएं। फिर इस पाठ को पढ़ें।

जाति क्या है?

आज भी भारत के सभी भागों में जात-पात की बातें देखने को मिलती हैं। यहां अधिकतर लोग अपने-आप को किसी न किसी जाति का मानते हैं। अक्सर जाति के आधार पर कुछ लोगों को जन्म से ऊंचा और कुछ लोगों को जन्म से नीचा माना जाता है। यहां तक कि समाज के कुछ लोगों को अछूत भी माना जाता है। उन लोगों पर तरह तरह का अत्याचार भी किया जाता है। तुम्हारे गांव या शहर में भी लोग कई जातियों में बंटे होंगे और एक दूसरे से जाति पाति के अनुसार व्यवहार करते होंगे।

इन विषयों पर तुम कई बार बातचीत करते होगे। लेकिन, क्या तुमने कभी सोचा है कि जाति क्या है - और जाति की क्या पहचान है? उदाहरण के लिए तुम कुछ लोगों का परिचय पढ़ो- "मैं रामू टेलर हूं", "मै गजानन पंडित हूं", "मैं भीरू लोहार हूं," "मैं शरदचन्द्र शिक्षक हूं।"

इनमें से किन लोगों की जाति तुम पहचान पाए? उन्हें रेखांकित करो।

तुमने ज़रूर भीरू को लोहार जाति का माना होगा। पर तुमने रामू को टेलर जाति का नहीं कहा होगा। तुम शायद सोच रहे हो कि लोहार जाति है, पर टेलर तो जाति नहीं। यह एक धन्धा है। हम ऐसा क्यों सोचते हैं? आओ इसके कुछ कारण स्पष्ट करें। तुम पढ़कर बताओ कि क्या तुम्हें ये कारण ठीक लगते हैं।

1. टेलर एक जाति नहीं है क्योंकि कोई जन्म से टेलर नहीं बन सकता। कोई भी कपड़े सिलने का काम सीख कर टेलर बन सकता है।

2. टेलर एक जाति नहीं है क्योंकि सब टेलर आपस में ही शादी करें ऐसा कोई नियम नहीं है - टेलर का लड़का कचहरी के बाबू की लड़की से शादी कर सकता है या फिर शिक्षक की लड़की से। ऐसा कोई नियम नहीं है कि टेलर का लड़का टेलर की लड़की से ही शादी करे।

3. टेलर जाति नहीं है क्योंकि ऐसा कोई नियम नहीं है कि वह टेलर के साथ ही उठ बैठ सकता है, टेलर के हाथ का खाना ही खा सकता है।

इसलिए टेलरी केवल एक धंधा है जाति नहीं।

जाति जन्म से तय होती है। एक जाति के लोग केवल आपस में शादी कर सकते हैं, जाति के बाहर शादी नहीं कर सकते। यह भी तय होता है कि एक जाति के लोग किस के साथ उठ बैठ सकते हैं, किस के हाथ का खाना खा सकते हैं, आदि।

क्या तुम अब कारण सहित बता सकते हो कि नीचे की सूची में से कौन-कौन सी जातियां हैं? और कौन-कौन से धन्धे हैं?

1. शिक्षक

2. डाकिया

3. बसोड़

4. ब्राह्मण

5. लोहा कारखाने में काम करने वाला मज़दूर

6. यादव

7. हरवाहा

8. कुम्हार

जाति व्यवस्था में एक और बात देखने को मिलती है- वह है लोगों को जन्म से ऊंचा या नीचा मानना। जो लोग जात-पात मानते हैं वे एक ब्राह्मण को चाहे वह कितना भी अनपढ़ हो ऊंचा मानेंगे न कि किसी अछूत कहलाने वाले को चाहे वह कितना भी विद्वान हो।

तो आओ थोड़ा समझें कि क्या पुराने ज़माने में भी जाति पाति की ऐसी बातें मानी जाती थीं? तब वे किस रूप में मानी जातीं थीं और किस तरह फैलीं? क्या उन दिनों भी जाति पाति का किसी ने विरोध किया या नहीं?

पिछले पाठों में तुमने पुराने ज़माने के कितने ही लोगों से मुलाकात कर ली है। उत्तर भारत के किसान, वेल्लाल किसान, परैयर मज़दूर, ब्राह्मण, शबर वनवासी, सीयडोणि नगर के व्यापारी व कारीगर, छोटे बड़े राजा और सामन्त। तुमने इन लोगों के आपसी रिश्तों को भी देखा और समझा है। अब इन रिश्तों की एक और ख़ास बात पर हम ध्यान देंगे। वह है जाति पाति के संबंधों की बात।

लाचार शिकारी अछूत जाति बने

शबर वनवासी तो जंगलों में अलग रहते थे। उनका अपना मुखिया भी था। शबर लड़के की दी हुई भेंट राजा हर्ष ने स्वीकार भी कर ली थी। यानी उन दिनों शबरों को तो अछूत नहीं समझा जाता था।

लेकिन कई और कबीलों और झुण्डों के लोगों को समाज में अछूत का सबसे निचला स्थान दिया जा चुका था। आओ पढ़ें कि यह कब और कैसे हुआ?

निषाद, चाण्डाल, केवट – तुमने अक्सर ये नाम सुने होंगे। ये वे लोग थे जो बहुत पुराने समय से शिकार कर के जिया करते थे। तुमने कक्षा 6 के पाठों में पढ़ा कि कैसे गौतम बुद्ध और राजा अशोक के समय में गंगा-यमुना के मैदान में खेती फैलने लगी थी। जिन जंगलों में निषाद, चाण्डाल जैसे शिकारी शिकार करते थे, उन जंगलों को काटा गया और गांव बसाए गए। गांव बसाने वाले लोगों और जंगलों मे रहने वाले कबीलों के बीच लड़ाई भी होती

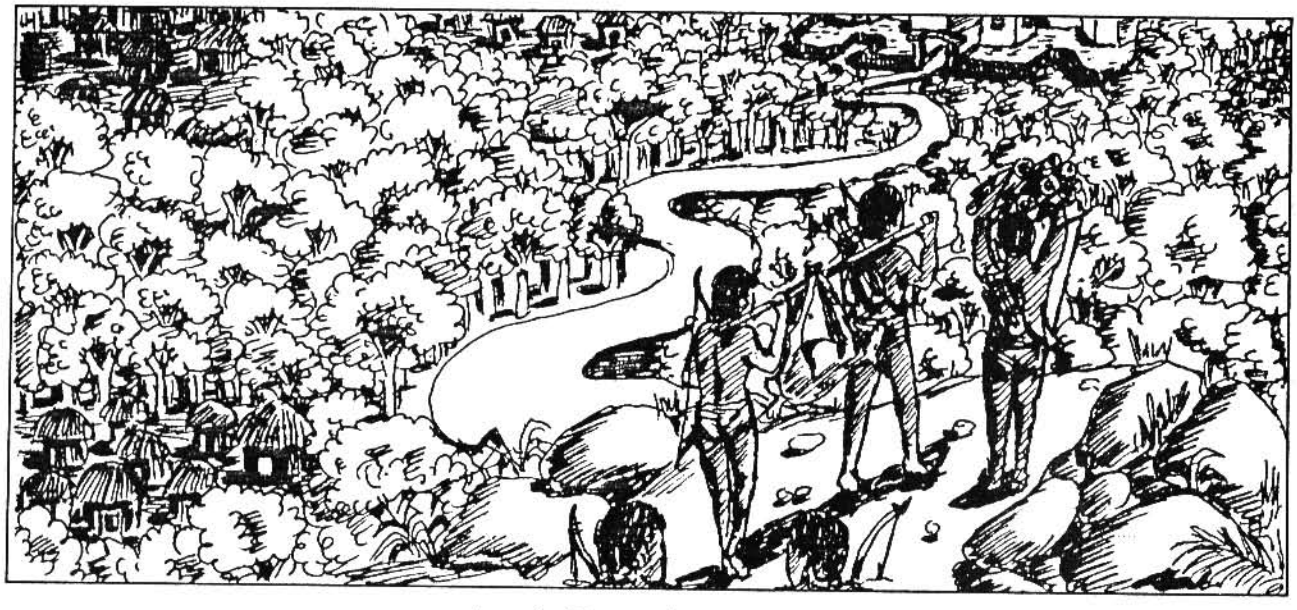

जंगल की चीज़े शहर ले जाकर बेचना

थी। मगर गांव बसाने वालों के लोहे के तीर और तलवार के सामने शिकारी लोग टिक नहीं पाए। उनके जंगलों की जगह गांव व शहर बसते गए।

ऐसे में शिकारी कबीले क्या करते? बहुत से कबीले तो दूसरे जंगलों में चले गए। मगर कई लोग नए गांवों-शहरों के आस-पास ही रह गए। उन्होंने ऐसा क्यों किया होगा?

अछूत माने जाने वाले लोग शहर के बाहर बस्तियों में रहते थे

गांव व शहर के लोगों को जंगल की कई चीज़ों की ज़रुरत पड़ती थी—जैसे, लकड़ी, बांस, खाल, मांस, कन्दमूल, फल, शहद आदि। कई शिकारी लोग जंगलों से इन चीज़ों को बटोरकर लाने लगे व गांव-शहरों में बेचने लगे। जंगल की चीज़ों के बदले में उन्हें अनाज, कपड़ा, लोहा आदि मिल जाता था।

समय के साथ कई सारे शिकारी लोग गांव-शहरों के आस-पास बसने लगे। उन्हें शहर या गांव के बीच में रहने तो नहीं दिया गया इसलिए उन्होंने बाहर ही अपनी बस्तियां बना लीं। अब धीरे-धीरे गांव शहर के लोग इन शिकारियों से कई और तरह के काम करवाने लगे। वे उन्हें ऐसे काम देने लगे जो वे खुद नहीं करना चाहते थे पर जो उनके लिए ज़रुरी भी थे। जैसे मांस के लिए जानवर मारना, मरे जानवर को हटाना, उसकी खाल निकालकर साफ करना, चमड़े की चीज़ें बनाना, मछली मारना, लकड़ी काटना, शमशान में काम करना। वे इन्हें गन्दे काम मानते थे – इसलिए अब लाचार चाण्डाल, निषाद आदि शिकारियों से इन्हें करवाने लगे। साथ ही उन्होंने यह नियम बना दिया कि शिकारी कबीले इन कामों को छोड़ कर और कोई काम धन्धा नहीं करेंगे।

गांव-शहर के लोग कहने लगे कि ये लोग 'गन्दे' काम करते हैं, इसलिए ये पवित्र नहीं हैं। इन्हें छूने या देखने से ही बाकी लोग अपवित्र हो जायेंगे। इसलिए इन्हें अछूत माना गया और कहा गया कि जो निषाद, चाण्डाल आदि कुल में जन्म लेगा वह जन्म से अछूत बन जाएगा और बड़ा होकर वही काम करेगा जो उनके लिए तय किए गए हैं।

गांव व शहर के लोग इन शिकारी लोगों को घृणा की दृष्टि से देखते थे। उन लोगों की बोल-चाल, वेश-भूषा, रीति-रिवाज़ भी गांव-शहर वालों से बहुत फर्क थे। इस कारण से गांव-शहर के लोग इन शिकारियों से हिल मिल कर रहना नहीं चाहते थे। अछूत बनाए गए कबीलों के लोग आपस में ही उठते बैठते रहे, आपस में ही शादी ब्याह करते रहे। वे अपने पुराने देवी देवताओं व रीति रिवाज़ों को मानते रहे।

राजा हर्ष के समय तक आते-आते (यानी सन् 600 तक) और जंगल कटे, और खेत बढ़े, सिंचाई के साधन बढ़े, खेतों में काम भी बढ़ा। खेतों में काम करने के लिए मज़दूरों की ज़रुरत पड़ी। तब इन अछूत मानी जाने वाली जातियों से खेतों में मज़दूरी करवाई जाने लगी। पर, उन्हें कभी खुद ज़मीन का मालिक बनने का अधिकार नहीं था।

तुम तलैच्छंगाडु गांव में वेल्लाल किसानों के परैयर मज़दूरों से मिले हो। ये परैयर मज़दूर भी अछूत जाति के माने जाते थे। क्या तलैच्छंगाडु में परैयर लोग खेती

के मालिक थे?

"अछूतों" की मेहनत पर समाज के अनेक ज़रुरी काम चलते थे। पर इन्हीं मेहनत करने वालों को अपवित्र, अछूत बता कर उनका अपमान होता रहा। इस प्रकार वही कबीले जो जंगलों में आजादी से शिकार करते थे, सारा जंगल जिनका था, वे उसी स्थान पर, कई अपमान सहते हुए, दूसरों की सेवा करने लगे।

शिकारी कबीलों के लोग अछूत बनाए जाने के बावजूद क्या सोच कर गांव व शहरों के पास बसे होंगे? उन पर किस तरह के बन्धन लगाए गए थे?

समाज में सब के लिए जाति पाति के नियम

बहुत पहले से समाज में ब्राह्मण अपने को सबसे पवित्र व ऊंचा मानते आए थे। दूसरी तरफ सबसे नीचे का दर्ज़ा अछूत कही गई जातियों को दिया गया। अलग-अलग इलाकों में जो राजवंश बन रहे थे, उनके कुलों को क्षत्रिय मानकर ऊंचा दर्ज़ा मिला। वेल्लाल किसान जैसी कई और जातियों को शूद्रों का निचला दर्ज़ा दिया गया। कई तरह के व्यापारियों व कारीगरों की भी जातियां हो गई थीं– जैसे कुम्हार, बढ़ई, लोहार, माली, कहार, तांबूलिक, सोनार, गंधिक, वणिक (बनिया)। इनमें से कुछ लोगों से तुम सीयडोणि शहर में मिले हो।

समाज के सभी तरह के लोगों के लिए नियम कायदे बन रहे थे–कि कौन किससे ऊंचा होगा और कौन नीचा, किस के बीच रोटी-बेटी का रिश्ता होगा और किन के बीच नहीं, कौन किसकी सेवा करेगा और कौन सेवा करवाएगा।

समाज में लोगों के बीच जो रिश्ते बन रहे थे उन्हें देखते हुए आपसी व्यवहार के कई नियम कायदे 'धर्मशास्त्र' नामक ग्रंथों में लिखे जाने लगे। धर्मशास्त्र ग्रंथों को ज़्यादातर ब्राह्मणों ने तैयार किया। इनमें लिखा गया कि लोग जिस जाति में जन्म लेते हैं उसी जाति का धंधा उन्हें अपनाना चाहिए। अगर कोई व्यक्ति अपने बाप-दादाओं का धंधा नहीं करता तो वह अधर्म है और उसे पाप लगेगा। इसी तरह दूसरी जाति में शादी करना भी पाप है और ऐसा करने वाले को भी दण्ड दिया जाना चाहिए।

उन दिनों लोगों के बीच ऊंच-नीच का भाव लागू करने की भी बहुत कोशिश की गई। धर्मशास्त्रों में यह लिखा गया कि अगर एक ब्राह्मण और एक शूद्र एक ही तरह के अपराध करते हैं तब भी ब्राह्मण को कम दंड और शूद्र को अधिक दंड दिया जाना चाहिए। अगर ऊंची जाति के लोग पैसा उधार लेते हैं तो उनसे कम ब्याज लेना चाहिए। अच्छे जरी रेशम के कपड़े ऊंची जाति के लोग ही पहन सकते हैं। नीची जाति के लोगों को फटे पुराने व सादे कपड़े ही पहनने चाहिए। नीची जाति के लोगों को हर तरह से ऊंची जाति के लोगों की सेवा करनी चाहिए। मन्दिरों व यज्ञों में ऊँची जाति के लोग ही भाग ले सकते हैं, नीची जाति के नहीं।

धर्मशास्त्रों में लिखने के अलावा ब्राह्मणों ने राजाओं से कहा कि जो लोग जात-पात के नियम तोड़ते हैं उन्हें दंड दिया जाए। उनका कहना था कि अगर राज्य में जात-पात के नियम लागू न होंगे तो अनर्थ हो जाएगा। नीची जातियां बराबरी करने लगेंगी और ऊंची जातियों की सेवा नहीं करेंगी। ऐसे में राज्य कैसे चलेगा?

वेलिर पुजारी, मुखिया और कबीले के लोग

दूसरी जाति का धंधा नहीं करना, दूसरी जाति में शादी न करना–तुम्हारे विचार में इन नियमों को लागू करने का क्या महत्व था, कक्षा में चर्चा करो।

तुम देखते होगे कि नियम बनते हैं पर कई बार लोग नियमों का पालन नहीं भी करते हैं। इसी तरह उन दिनों जाति-पाति के नियम तो बन रहे थे पर उन्हें कभी-कभी ज़रुरत पड़ने पर अनदेखा भी किया जाता था। इस बात के उदाहरण मिलते हैं कि कोई शूद्र जाति का होकर भी राजा बन गया और क्षत्रिय जाति के राजा ने दूसरी जाति की लड़की से शादी कर ली। फिर भी आज की तुलना में उन दिनों इन नियमों का ज़्यादा सख्ती से पालन होता था।

तुम्हारे परिवार व गांव में इन नियमों का कितना पालन होता है?
ऐसी बातों के चार उदाहरण सोचो जिनमें आजकल जाति के नियम कमज़ोर हो गए हैं।

जातपात की बातें पूरे भारत में फैलीं

शुरु शुरु में जात-पात के नियम सिर्फ गंगा-यमुना के मैदान और मालवा जैसे पुराने जनपदों के इलाके में ही माने जाते थे। भारत के अन्य भागों में, जैसे आज जहां बंगाल, कर्णाटका, तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश, मध्यप्रदेश, असम, कश्मीर, केरल आदि प्रदेश हैं, जात-पात की बातें फैली नहीं थीं।

मगर जैसे जैसे सब इलाकों में राजा, महाराजा और सामंत बने, जैसे जैसे उन इलाकों में ब्राह्मण बसते गए, वैसे ही जात-पात की बातें भी फैलती गईं। उदाहरण के लिए, तमिलनाडु इलाके में एक कबीला बहुत पुराने समय से रहता था। यह था वेलिरों का कबीला। इस कबीले के अपने मुखिया थे, और पुजारी थे। उनके देवता थे मुरुगन। वेलिर लोग मुरुगन और अपनी एक देवी माता के लिए नाचगान करते थे व पशु बलि चढ़ाते थे।

धीरे-धीरे वेलिर कबीला खेती करने लगा। उनके कई गांव बसे। वेलिर लोगों में ऊंचे नीचे का फर्क आना शुरु हुआ। वेलिरों के मुखिया राजा बनने लगे। उन्होंने ब्राह्मणों को अपने इलाके में बुलाकर बसाया। जब ब्राह्मण जाकर वेलिरों के बीच बसे तो वे वेलिरों के राजा को ऊंची क्षत्रिय जाति का बताने लगे। वेलिरों के पुजारी को ब्राह्मण जाति का दर्जा दिया गया। उन्हें वेद पाठ करना, यज्ञ करना सिखाया गया। वेलिरों के ये पुजारी आगे जा कर द्रविड जाति के ब्राह्मण कहलाए। ब्राह्मणों ने वेलिर कबीले के खेती करने वाले लोगों को नीची शूद्र जाति का बताया।

मुखिया क्षत्रिय जाति का राजा बना और पुजारी ब्राह्मण बना

ये ही किसान वेल्लाल भी कहलाए। इन्हीं से हम तलैच्छंगाडु में मिले थे।

वेलिर कबीले के लोग तीन जातियों में बंट गए थे। ये थीं– ———, द्रविड ———— और शूद्र।

जिन ब्राह्मणों को वेलिर राजाओं ने बुलाकर बसाया था वे अपने आपको द्रविड ब्राह्मणों से ऊंचा मानते होंगे/ बराबर मानते होंगे/ नीचा मानते होंगे?

वेलिरों के राजा क्षत्रिय जाति के हो गए। इसी तरह सीयडोणि का सामन्त भी शायद क्षत्रिय ही माना जाता होगा। क्षत्रिय होने पर भी इन दोनों में क्या अन्तर हो सकता है? विचार करो।

शबर वनवासी भी खेती करते थे और तलैच्छंगाडु के वेल्लाल किसान भी। वेल्लाल किसान शूद्र जाति के माने गए। उनमें और शबर वनवासियों में क्या अन्तर हो सकता है?

जात-पात का विरोध

जात-पात के भेदभाव का शुरु से ही बहुत विरोध हुआ। सबसे पहले तो गौतम बुद्ध, महावीर और उनके विचारों को मानने वाले लोगों ने ही इस बात का खण्डन किया कि ब्राह्मण जन्म से ही सबसे ऊंचे और पवित्र हैं। उनका विचार था कि जन्म के आधार पर लोगों के बीच भेदभाव करना ग़लत है। बाद में कई और सन्त हुए जिन्होंने जाति के भेदभाव को ठुकरा कर जीने की कोशिश की। उनके बारे में हम आगे पढ़ेंगे।

आज अपने देश में जो कानून लागू हैं उनके अनुसार तो जातपात का भेदभाव करने से दण्ड मिल सकता है। छुआछूत मानना, कुएं, स्कूल, अस्पताल, होटल, मन्दिर आदि सार्वजनिक जगहों में हरिजनों को न आने देना कानूनी जुर्म है। पर, जातपात को खतम करने के कानूनों के बावजूद ये भेदभाव पूरी तरह मिट नहीं पाए हैं।

तुम्हारे विचार में जातपात खत्म करने के लिए किस तरह की कोशिश की जानी चाहिए?

अभ्यास के प्रश्न

1. सबसे पहले किन लोगों को अछूत जाति माना गया? अछूत जाति कहलाने से पहले वे क्या करते थे?
2. वनवासी लोगों को जनपद के लोगों ने किस तरह के काम करने को दिए और क्यों?
3. द्रविड ब्राह्मण एक जाति है - यह कैसे बनी थी?
4. जात-पात के नियमों में ऊंच-नीच का भेदभाव किस तरह था? कुछ उदाहरण बताओ। इस भेदभाव का विरोध कैसे हुआ?